22 सुदामा चरित

सुदामा और कृष्ण बाल-सखा थे। सुदामा अति दीन थे। भिक्षा माँगकर भोजन करते थे और हरि-भजन में लीन रहते थे। उनकी पत्नी को अपनी दरिद्रता पर बड़ा क्षोभ होता था। उन्होंने दरिद्रता दूर कराने के लिए सुदामा को द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण के पास जाने को विवश कर दिया। श्रीकृष्ण अपने दीन मित्र सुदामा को अपार धन देकर जिस उदारता एवं मित्रभाव का परिचय दिया वह अद्वितीय है। ब्रज भाषा की यह कविता खड़ी बोली हिन्दी के अतीत से भी हमें परिचित कराती है।

P54XKH

सीस पगा न झगा तन में, प्रभु जानै को आहि, बसै केहि ग्रामा
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह की नहिं सामा
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि, रह्यौ चकि सो बसुधा अभिरामा
पूछत दीनदयाल को धामु, बतावत आपनो नाम सुदामा

बोल्यो द्वारपालक, सुदामा नाम पांड़े सुनि
छाँड़े राजकाज ऐसे जी की गति जाने को।
द्वारका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँय,
भेंटे भरि अंक लपटाय दुख साने को ।।
नैने दोऊ जल भरि पूछत कुसल हरि,
विप्र बोल्यो विपदा में मोहिं पहिचाने को।
जैसी तुम करी तैसी करै को दया के सिन्धु,
ऐसी प्रीति दीनबन्धु दीनन सों भाने को ।।

ऐसे बिहाल बिवाइन सों पग, कंटक-जाल लगे पुनि जोये,
हाय! महादुख पायो सखा! तुम आये इतै न, कितै दिन खोये
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोये,
पानि परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये

आगे चना गुरु मात दिये, ते लये तुम चाबि, हमें नहिं दीने,
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सौं, चोरी की बानि में हौं जु प्रबीने
गाँठरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने,
पाछिलि बानि अजौं न तजौ तुम, तैसेई भाभी के तन्दुल कीने।।

वैसोई राज समाज बनै, गज-बाजि घने, मन संभ्रम छायौ ।
कैधों परयौं कहुँ मारग भूलि कें, कै अब फेरि मैं द्वारिका आयौ।।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मँझायौ।
पूछत पाँड़े फिरें सबसों पर, झोंपरि को कहुँ खोजु न पायौ।।

कै वह टूटी सी छानी हुती, कहँ कंचन के सब धाम सुहावत।
कै पग में पनही न हुतीं, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत।।
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।
कै जुरतो नहिं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत ।।

धन्य धन्य जदुवंश-मनि, दीनन पै अनुकूल ।
धन्य सुदामा सहित तिय, कहि बरसहिं सुर फूल ।।

– नरोत्तमदास

शब्दार्थ

पगा	–	पगड़ी
झगा	–	ढीलाकुर्त्ता
आहि	–	है
उपानह	–	जूता
साने	–	मिश्रित करना
बिहाल	–	बेहाल
जोये	–	जिसे
जाल	–	समूह
कंटक	–	बाधा, काँटा
जु	–	जो
दाख	–	अंगुर, मुनक्का
अभिरामा	–	मोहक
बोल्यो	–	बोला
नैन	–	आँख
बिपदा	–	दु:ख

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. सुदामा के आगमन की सूचना देते समय द्वारपाल के मनोदशा का चित्रण कीजिए।
2. सुदामा की दीन दशा देखकर श्रीकृष्ण किस प्रकार भाव-विह्वल हो गये?
3. गुरु के यहाँ की किस बात की याद श्रीकृष्ण ने सुदामा को दिलाई?
4. अपने गाँव वापस आने पर सुदामा को क्यों भ्रम हुआ?

पाठ से आगे

1. श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता आज उदाहरण के रूप में क्यों प्रस्तुत की जाती है?
2. सुदामा को कुछ न देकर उनकी पत्नी को सीधे वैभव सम्पन्न करने का क्या औचित्य था?
3. कविता के भावों को ध्यान में रखकर एक कहानी लिखिए।
4. आपका प्रिय मित्र यदि आपसे कोई वस्तु छुपाता है तो आप उसे किस तरह की उलाहना देते हैं?

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए :
   मनि, सीस, राजकाज बिहाल, दसा, बामि, मारग।

गतिविधि

1. श्रीराम-सुग्रीव मैत्री और दुर्योधन-कर्ण मैत्री के बारे में भी पढ़िए और उन पर एक-एक लघु नाटिका तैयार कीजिए।
2. श्री कृष्ण से मिलने के बाद सुदामा के गाँव में हुए परिवर्तन को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।